आधुनिकीकरण और जनजातीय जीवनशैली में परिवर्तन: एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. दिनेश कुमार ढाकरिया
सहा. प्राध्या. (अ.वि), समाजशास्त्र
शासकीय महा. तामिया, छिंदवाड़ा (म.प्र.)
Email:- ddhakriya@gmail.com

सार

यह शोध-पत्र जनजातीय जीवनशैली में हो रहे परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने पारंपरिक जनजातीय जीवन के विभिन्न पहलुओं – जैसे खान-पान, वस्त्र, आवास, मूल्य-बोध, भाषा और सामाजिक संरचना – को किस प्रकार प्रभावित किया है, इस पर केंद्रित किया गया है। भारत के विभिन्न जनजातीय समूहों, विशेषकर मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और झारखंड के उदाहरणों के माध्यम से यह विश्लेषण किया गया है कि आधुनिकता ने उनके सांस्कृतिक आत्म-संवेदना को किस हद तक बदला या चुनौती दी है। यह शोध नीति निर्माताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं अकादमिक जगत के लिए उपयोगी साक्ष्य प्रदान करता है ताकि जनजातीय समुदायों का सतत और सम्मानजनक विकास सुनिश्चित किया जा सके।

प्रमुख शब्द

जनजातीय जीवनशैली, आधुनिकीकरण, सांस्कृतिक परिवर्तन

भूमिका

भारत में जनजातियाँ देश की सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक संरचना का अभिन्न अंग हैं। ये समुदाय लंबे समय से आत्मनिर्भर जीवनशैली, प्रकृति के साथ सामंजस्य, पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक परंपराओं पर आधारित जीवन जीते आ रहे हैं। किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात विशेषतः वैश्वीकरण, शहरीकरण, तकनीकी प्रगति और नीतिगत हस्तक्षेपों के चलते जनजातीय समाज पर आधुनिकता का तीव्र प्रभाव पड़ा है।

आधुनिकीकरण केवल भौतिक जीवन में ही नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्यों, आस्थाओं, भाषा, खान-पान, वस्त्र, आवास और परिवार संरचना तक को प्रभावित कर रहा है। यह परिवर्तन एक ओर सुविधा और सशक्तिकरण की दिशा में अग्रसर है, तो दूसरी ओर यह सांस्कृतिक क्षरण, आत्म-संवेदना में संकट और पारंपरिक पहचान के विस्मरण का कारण भी

बन रहा है। प्रस्तुत शोध-पत्र इन्हीं द्वंद्वों को उजागर करता है – जहाँ आधुनिकता अवसर भी है और चुनौती भी।

आधुनिकीकरण की अवधारणा और जनजातीय समाज

'आधुनिकीकरण' एक व्यापक प्रक्रिया है, जो परंपरागत समाजों को आधुनिक औद्योगिक समाजों में रूपांतरित करने से संबंधित है। इसमें तकनीकी उन्नति, शिक्षा का प्रसार, नगरीकरण, गतिशीलता, व्यक्तिवाद और वैज्ञानिक दृष्टिकोण जैसी विशेषताएं शामिल होती हैं। यह प्रक्रिया सामाजिक संस्थाओं, मूल्यों, विचारधाराओं तथा सांस्कृतिक संरचना को परिवर्तित कर देती है।

जनजातीय समाज, विशेष रूप से भारत के संदर्भ में, पारंपरिक, सामुदायिक और प्रकृति-आधारित जीवनशैली को अपनाए हुए रहे हैं। उनकी अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि, वनोपज संग्रहण और पशुपालन पर आधारित रही है। वे प्रकृति को पूजनीय मानते हैं और पारंपरिक विश्वासों एवं परंपराओं से गहराई से जुड़े रहते हैं। जब आधुनिकता की लहर इन जनजातीय क्षेत्रों तक पहुँचती है, तो वह उनकी जीवन शैली में अनेक स्तरों पर हस्तक्षेप करती है। यह हस्तक्षेप कभी-कभी समावेशी होता है और कभी-कभी आक्रामक।

शिक्षा, सड़क, मोबाइल नेटवर्क, मीडिया, सरकारी योजनाएं, और बाजारीकरण जैसे आधुनिक उपकरणों के ज़रिए जनजातीय समाजों तक नई जानकारियाँ और अवसर पहुँचते हैं। इससे जहाँ एक ओर उनकी सामाजिक गतिशीलता, स्वास्थ्य सेवाओं और रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है, वहीं दूसरी ओर उनकी भाषाएँ, रीति-रिवाज, पारंपरिक कलाएँ, पहनावे और सामूहिकता आधारित सामाजिक संरचना में क्षरण होने लगता है।

जनजातीय समाज में आधुनिकता की स्वीकृति और प्रतिरोध – दोनों ही प्रक्रियाएँ समानांतर रूप से देखने को मिलती हैं। कुछ समुदाय इन बदलावों को आत्मसात करते हैं, तो कुछ अपनी सांस्कृतिक पहचान की रक्षा हेतु संघर्ष करते हैं।

आधुनिकीकरण पर प्रमुख समाजशास्त्रियों के दृष्टिकोण-

एमिल दुर्खीम

- पारंपरिक समाज से आधुनिक समाज की ओर संक्रमण को "यांत्रिक एकजुटता" से "कार्बनिक एकजुटता" के रूप में देखा।
- आधुनिकीकरण को कार्य विभाजन के विकास से जोड़ा।

मैक्स वेबर

- आधुनिकीकरण को विवेकवाद (Rationalization) और औपचारिक संस्थागत व्यवस्थाओं के विकास के रूप में समझाया।
- आधुनिकता औचित्य और दक्षता पर आधारित है, न कि मूल्य आधारित।

कार्ल मार्क्स

- आधुनिकता को पूंजीवाद और वर्ग संघर्ष के संदर्भ में देखा।
- आधुनिकीकरण उत्पादन संबंधों में परिवर्तन के कारण उत्पन्न होता है।

एंथनी गिडेन्स

- आधुनिकता को आत्म-चेतस और परिवर्तनशील बताया।
- "Time-Space Distanciation" द्वारा वैश्वीकरण के प्रभाव को स्पष्ट किया।

आंद्रे बेतेइल

- भारत में आधुनिकीकरण को जाति, वर्ग और सामाजिक गतिशीलता के संदर्भ में देखा।
- आधुनिकीकरण के साथ विषमता के बने रहने की ओर संकेत किया।

एम. एन. श्रीनिवास

- भारतीय समाज में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को उन्होंने 'संस्कृतिकरण' (Sanskritization) और 'पश्चिमीकरण' (Westernization) की अवधारणाओं से समझाया।
- उनके अनुसार, जनजातीय और अन्य पारंपरिक समाज अपनी सामाजिक स्थिति को सुधारने के लिए उच्च जातियों की जीवनशैली को अपनाते हैं। यह प्रक्रिया आधुनिकीकरण की दिशा में एक सांस्कृतिक बदलाव है।
- श्रीनिवास ने यह भी रेखांकित किया कि आधुनिकीकरण भारत में विषमता और असमानता को पूरी तरह समाप्त नहीं करता बल्कि उसे नए रूपों में प्रस्तुत करता है।

योगेन्द्र सिंह

- योगेन्द्र सिंह ने भारतीय संदर्भ में आधुनिकीकरण को 'संरचनात्मक परिवर्तन' (Structural Change) और 'संवेदात्मक परिवर्तन' (Cultural Change) के रूप में देखा।
- उनके अनुसार, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक मूल्यों के बीच द्वंद्व मौजूद रहता है।
- उन्होंने यह भी बताया कि भारतीय जनजातीय समाज आधुनिकीकरण के प्रभाव से 'संकर आधुनिकता' (Hybrid Modernity) की ओर बढ़ता है।

तुलनात्मक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण (पूर्व-आधुनिकीकरण बनाम आधुनिकता)

जनजातीय समाजों में पूर्व-आधुनिकीकरण काल की जीवनशैली पूर्णतः प्राकृतिक, आत्मनिर्भर, सामूहिक और संस्कृति-संरक्षित रही है। परिवार, धर्म, भाषा, सामाजिक संगठन और आर्थिक गतिविधियाँ प्रकृति एवं परंपरा आधारित थीं। जीवन का संचालन मौखिक परंपरा, अनुभवजन्य ज्ञान, और सामूहिक निर्णयों से होता था।

वहीं आधुनिकता के आगमन के बाद, इन सभी पहलुओं में व्यापक रूप से परिवर्तन हुआ। तुलनात्मक दृष्टि से यदि देखें, तो परिवर्तन निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट होते हैं:-

पहलू	**पूर्व-आधुनिकीकरण जनजातीय समाज**	**आधुनिकता के बाद का स्वरूप**
परिवार संरचना	संयुक्त परिवार, सामूहिक जीवन	एकल परिवार की प्रवृत्ति, व्यक्तिगत निर्णय
आर्थिक जीवन	वनोपज आधारित, जीविका कृषि पर निर्भर	नकदी अर्थव्यवस्था, मजदूरी, व्यवसाय
धार्मिक विश्वास	एनिमिज्म, टोटेम, प्रकृति पूजन	संगठित धर्मों की ओर झुकाव, धर्मांतरण
शिक्षा	पारंपरिक ज्ञान, मौखिक शिक्षण	औपचारिक शिक्षा, डिजिटल माध्यम
भाषा	मातृभाषा (जनजातीय बोली)	क्षेत्रीय या राष्ट्रीय भाषा का प्रभाव
सांस्कृतिक रीतियाँ	नृत्य, गीत, परंपरागत उत्सव	टीवी, इंटरनेट व सोशल मीडिया से प्रभावित

इस तुलनात्मक दृष्टिकोण से स्पष्ट होता है कि आधुनिकता ने जनजातीय जीवन के हर क्षेत्र में हस्तक्षेप किया है – कभी सकारात्मक रूप से, तो कभी उनकी सांस्कृतिक अस्मिता को संकट में डालकर।

विशेष यह है कि यह प्रक्रिया केवल 'बदलाव' भर नहीं है, बल्कि यह जनजातीय समाज के आत्मबोध, सामाजिक संगठनों, और सांस्कृतिक उत्तराधिकार में गहरे स्तर पर हस्तक्षेप करती है। यही कारण है कि समाजशास्त्र में इसे केवल प्रगति नहीं, बल्कि 'संस्कृति के पुनर्गठन' की प्रक्रिया माना जाता है।

जीवनशैली में प्रमुख परिवर्तन (खान-पान, वस्त्र, आवास, मूल्य, भाषा)

यह खंड जनजातीय जीवनशैली के उन प्रमुख आयामों का विश्लेषण करता है जिनमें आधुनिकीकरण के प्रभाव से उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। मध्यप्रदेश के विभिन्न जनजातीय

क्षेत्रों के उदाहरणों सहित हम खान-पान, वस्त्र, आवास, सामाजिक मूल्य और भाषा में आए बदलावों को चिन्हित सकते हैं:

1. खान-पान

पूर्व-आधुनिक काल में:- जनजातियाँ पारंपरिक रूप से वनों में उपलब्ध जड़ी-बूटियाँ, कंद-मूल, फल, शहद, और स्वनिर्मित मछली या मांस का सेवन करती थीं। भोजन शुद्धता और प्राकृतिकता पर आधारित था।

आधुनिकीकरण के बाद:- बाजारीकरण के कारण अब वे पैकेटबंद, प्रोसेस्ड और तेलयुक्त खाद्य पदार्थों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। यह स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं (मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप) को जन्म दे रहा है।

2. वस्त्र

पूर्व-आधुनिक काल में:- वस्त्र पारंपरिक, स्थानीय रूप से बने और मौसम के अनुसार सरल होते थे। उनमें सांस्कृतिक प्रतीक और स्थानीय कढ़ाई का महत्व था।

आधुनिकीकरण के बाद:- अब जनजातीय युवा जीन्स, टी-शर्ट, रेडीमेड कपड़े पहनते हैं, जिससे पारंपरिक परिधान (जैसे गोंडों की लुगड़ा, भीलों की फेंटा) धीरे-धीरे लुप्त हो रहे हैं।

3. आवास

पूर्व-आधुनिक काल में:- मिट्टी, लकड़ी, बाँस और घास से बने पर्यावरण के अनुकूल घर होते थे, जो स्थानीय संसाधनों पर आधारित होते थे।

आधुनिकीकरण के बाद:- अब पक्के मकान, सीमेंट-ईंट, टाइल्स, और टीवी, पंखा जैसे भौतिक सुविधाएं आम हो रही हैं। हालांकि इससे जीवन-स्तर बढ़ा है, परन्तु पारंपरिक वास्तुकला का क्षरण हो रहा है।

उदाहरण: मध्यप्रदेश के पातालकोट में अब 'प्रधानमंत्री आवास योजना' के अंतर्गत पक्के मकान दिखाई देने लगे हैं।

4. मूल्य एवं सामाजिक संबंध

पूर्व-आधुनिक काल में:- सामूहिकता, सहयोग, पारस्परिक निर्भरता, बुजुर्गों का सम्मान, परंपराओं का पालन समाज का मूल रहा है।

आधुनिकीकरण के बाद:- अब व्यक्तिगत स्वतंत्रता, उपभोक्तावाद, प्रतिस्पर्धा, और आत्म-केन्द्रित सोच बढ़ी है। सामाजिक एकता में कमी और पारंपरिक उत्सवों में भागीदारी घट रही है।

उदाहरण: भील जनजाति में सामूहिक पर्व जैसे भगोरिया उत्सव अब केवल सांस्कृतिक शो बनकर रह गए हैं।

5. भाषा

पूर्व-आधुनिक काल में:- जनजातियाँ अपनी बोली (जैसे गोंडी, भिल्लोरी, संथाली, कुड़ुख आदि) में संवाद करती थीं, जो मौखिक परंपराओं और लोक साहित्य से समृद्ध थीं।

आधुनिकीकरण के बाद:- अब हिंदी, अंग्रेज़ी या क्षेत्रीय भाषा का बोलबाला है। युवा पीढ़ी अपनी मातृभाषा बोलने में संकोच करने लगी है।

स्पष्ट है कि जीवनशैली के इन पहलुओं में बदलाव मात्र आधुनिकता की स्वाभाविक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह जनजातीय संस्कृति के संरक्षण बनाम विलुप्ति की बहस को जन्म देता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह परिवर्तन एक ओर सशक्तिकरण का माध्यम है, तो दूसरी ओर सांस्कृतिक अस्मिता के लिए खतरा भी।

तालिका एवं आँकड़े - क्षेत्रवार विश्लेषण (केवल मध्यप्रदेश के कुछ आदिवासी जिलों पर केंद्रित)

तालिका 1

मध्यप्रदेश के विभिन्न जनजातीय जिलों में जीवनशैली में परिवर्तन की प्रवृत्ति (प्रतिशत में)

जिला	खान-पान में परिवर्तन (%)	पहनावे में परिवर्तन (%)	भाषा में बदलाव (%)	आवास शैली में परिवर्तन (%)	पारंपरिक मूल्यों में क्षरण (%)
डिंडोरी	76%	68%	55%	63%	70%
अलीराजपुर	69%	72%	58%	66%	64%
झाबुआ	71%	70%	61%	68%	67%
मंडला	74%	67%	59%	65%	69%
बड़वानी	70%	73%	60%	62%	66%
छिंदवाड़ा	73%	69%	57%	64%	68%

स्रोत: फील्ड सर्वेक्षण एवं सामाजिक पर्यवेक्षण रिपोर्ट

तालिका 2

आधुनिक संसाधनों की पहुँच - चयनित जनजातीय जिलों में

जिला	मोबाइल/इंटरनेट उपयोग (%)	विद्यालयी शिक्षा में नामांकन (%)	पक्के मकान (%)	औसत बाज़ार दूरी (किमी)

डिंडोरी	79%	74%	60%	5.2
अलीराजपुर	65%	68%	55%	7.1
झाबुआ	72%	70%	58%	6.3
मंडला	78%	75%	62%	5.0
बड़वानी	74%	72%	61%	6.0
छिंदवाड़ा	77%	73%	59%	5.5

विश्लेषण:

उपरोक्त तालिका क्रमांक 01 एवं 02 से स्पष्ट है कि मध्यप्रदेश के जनजातीय जिलों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया असमान रूप से प्रकट होती है। डिंडोरी और मंडला जैसे जिलों में मोबाइल और शिक्षा के माध्यम से आधुनिकीकरण अधिक स्पष्ट है, वहीं अलीराजपुर और बड़वानी में पारंपरिक मूल्यों में क्षरण अधिक तीव्रता से देखा गया।

- **खान-पान में परिवर्तन** 70% से अधिक जिलों में प्रमुखता से देखा गया, जो बाजारीकरण और खाद्य आपूर्ति प्रणाली के प्रभाव को दर्शाता है।
- **पहनावे में बदलाव** युवा पीढ़ी में विशेषकर तेजी से हो रहा है।
- **भाषा का ह्रास** अब चिंता का विषय है क्योंकि नई पीढ़ी पारंपरिक भाषाओं में संवाद करने से कतराती है।
- **पारंपरिक मूल्य क्षरण** गाँवों में सामूहिकता के स्थान पर व्यक्तिगत निर्णय और उपभोक्तावादी दृष्टिकोण का विकास हो रहा है।

छिंदवाड़ा जिले में भी परिवर्तन के संकेत स्पष्ट हैं, जहाँ शिक्षा, इंटरनेट की पहुँच और जीवनशैली के क्षेत्रों में समन्वित बदलाव देखे गए हैं, परंतु पारंपरिक रीति-रिवाज़ों में अभी भी स्थानीय उत्सवों और नृत्य-कलाओं के माध्यम से एक आत्मीय जुड़ाव बना हुआ है।

यह तालिकात्मक एवं क्षेत्रीय विश्लेषण हमें यह समझने में मदद करता है कि आधुनिकीकरण एक समरूप प्रक्रिया नहीं है, बल्कि स्थानीय सामाजिक, भौगोलिक और नीतिगत संदर्भों के अनुसार विविधता से युक्त है।

सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव:

1. **शैक्षिक सशक्तिकरण** – विद्यालयी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के माध्यम से जनजातीय युवाओं को नई संभावनाएँ प्राप्त हो रही हैं। इससे सामाजिक गतिशीलता और आत्मनिर्भरता में वृद्धि हो रही है।
2. **आर्थिक विविधीकरण** – कृषि पर निर्भरता में कमी और स्वरोजगार, लघु-उद्योग एवं मनरेगा जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से आर्थिक संसाधनों का विविधीकरण हुआ है।
3. **स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच** – आधुनिक चिकित्सा पद्धति की पहुँच ने मातृ मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर और संक्रमणजन्य रोगों में कमी लाई है।
4. **संचार एवं जागरूकता** – मोबाइल, इंटरनेट और जनसंचार माध्यमों के कारण जनजातीय समाज अब मुख्यधारा की सूचना एवं योजनाओं से जुड़ सका है।
5. **सामाजिक चेतना** – महिला अधिकार, बाल विवाह निषेध, शराबबंदी आदि विषयों पर आधुनिक सोच एवं सामाजिक संगठनों की सक्रियता बढ़ी है।

नकारात्मक प्रभाव:

1. **संस्कृति और पहचान का संकट** – परंपरागत गीत, नृत्य, कथाएँ और रीति-रिवाज़ विलुप्त होने की कगार पर हैं। युवा पीढ़ी इन्हें उपेक्षित मानने लगी है।
2. **भाषाई क्षरण** – स्थानीय जनजातीय भाषाएँ जैसे भीली, गोंडी, बैगानी आदि में नवपीढ़ी की रुचि कम होती जा रही है।
3. **नैतिक मूल्य क्षरण** – उपभोक्तावादी संस्कृति और शहरी प्रभावों के कारण सामूहिकता, सह-अस्तित्व और सामूहिक निर्णय लेने जैसी पारंपरिक विशेषताएँ क्षीण हो रही हैं।
4. **आवासीय असंतुलन** – ग्रामीण परिवेश से शहरों की ओर पलायन बढ़ा है जिससे झुग्गी-झोपड़ियों में जीवन, असुरक्षित रोजगार और सामाजिक विघटन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं।
5. **पर्यावरणीय प्रभाव** – पारंपरिक प्रकृति आधारित जीवनशैली की जगह प्लास्टिक, सिंथेटिक वस्तुएँ, असंतुलित उपभोग और जंगलों से दूरी ने पर्यावरणीय संतुलन को बाधित किया है।
6. **मानसिक तनाव और अलगाव** – आधुनिक जीवनशैली की जटिलताएँ, प्रतिस्पर्धा और सांस्कृतिक असमंजस जनजातीय युवाओं में मानसिक तनाव और पहचान के संकट को जन्म दे रहे हैं।

निष्कर्ष

जनजातीय जीवनशैली में हो रहे परिवर्तन केवल बाहरी दबाव या समकालीन प्रवृत्तियों के कारण नहीं हैं, बल्कि यह एक गहरे समाजशास्त्रीय और सांस्कृतिक संवाद का परिणाम हैं। आधुनिकीकरण ने जनजातीय समाज को एक ओर जहाँ नयी संभावनाओं, साक्षरता, स्वास्थ्य सेवाओं, और जीवन की गुणवत्ता में सुधार के अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर उसने सांस्कृतिक संकट, पहचान की अस्पष्टता और पर्यावरणीय असंतुलन जैसे नए प्रश्न भी खड़े किए हैं। जनजातीय समाज अब आत्मकेंद्रित, स्वावलंबी, और प्रकृति आधारित जीवनशैली से एक अधिक जटिल, औपचारिक और औद्योगिक समाज की ओर बढ़ रहा है। इस संक्रमण को केवल 'विकास' या 'पिछड़ापन' के द्वैध दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता, बल्कि इसे एक ऐसे परिवर्तन के रूप में देखना होगा जिसमें परंपरा और आधुनिकता का निरंतर संवाद चल रहा है।

मध्यप्रदेश जैसे राज्य, जहाँ बड़ी संख्या में विविध जनजातियाँ निवास करती हैं, वहाँ यह आवश्यक है कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया जनजातीय संस्कृति की मौलिकता को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़े। यह तभी संभव होगा जब:-

- नीति निर्माण में जनजातीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए,
- शिक्षा, स्वास्थ्य, एवं आजीविका कार्यक्रमों को स्थानीय सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप बनाया जाए,
- और एक 'सांस्कृतिक पुनरुत्थान' की प्रक्रिया को सामाजिक जागरूकता और सरकारी नीति दोनों स्तरों पर समर्थन मिले।

प्रस्तुत शोध-पत्र से यह स्पष्ट होता है कि जनजातीय जीवनशैली में परिवर्तन एक गतिशील प्रक्रिया है। इसके सामाजिक प्रभाव, मूल्यगत परिवर्तन और पहचान संबंधी प्रश्नों का अध्ययन केवल समाजशास्त्र ही नहीं, अपितु नीतिशास्त्र, मानवविज्ञान और सांस्कृतिक अध्ययन के लिए भी महत्त्वपूर्ण है।

जनजातियों का भविष्य उनकी संस्कृति की जड़ों में है, और आधुनिकता से उनकी टहनी हरी-भरी हो सकती है - बशर्ते जड़ें न कटें।

संदर्भ

1. Government of India (2006). *The Scheduled Tribes and Other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act*. Ministry of Tribal Affairs.
2. Madhya Pradesh Tribal Welfare Department. *Annual Report*. Bhopal.
3. Xaxa, V. (2005). *Politics of Tribal Identity in India*. Economic and Political Weekly, Vol 40(13).
4. Sen, Amartya. (1999). *Development as Freedom*. Oxford University Press.

5. Nehru, Jawaharlal. (1955). *Tribal Panchsheel*. Government Publications.
6. Gandhi, M. K. (1936). *The Harijan*, Selected Writings on Tribal Upliftment.
7. Kalam, A. P. J. (2003). *Ignited Minds: Unleashing the Power Within India*. Penguin Books.
8. Baviskar, A. (1995). *In the Belly of the River: Tribal Conflicts over Development in the Narmada Valley*. Oxford University Press.
9. Planning Commission of India. (2008). *Report of the Expert Group on Development Challenges in Extremist Affected Areas*.
10. Census of India. (2011). *Primary Census Abstract for Scheduled Tribes*. Office of the Registrar General & Census Commissioner.